

Bharatiya Shikshan Mandal

Research paper

Unsung worriers of independence

by- Vaibhav Rawal

Reference ID -- NRPMARA0297138

हमारा प्यारा देश भारत 15

अगस्त 1947 को अंग्रेजों की
गुलामी से आजाद हुआ था इसे
आजाद कराने में अनेक वीरों ने

अपने प्राणों का बलिदान दिया
था " उन सभी को मेरा
प्रणाम " पर मैं इस रिसर्च
पेपर में जिसकी बात करूंगा
वह भी एक वीर योद्धा थे

जो कि मेरे अच्छे दोस्त
सुदर्शन कुमावत के पर दादा
जी भगवती लाल जी थे वह
भी आज तक एक अनशन
वॉरियर्स ऑफ इंडिपेंडेंस में से
एक थे मेरे दोस्त सुदर्शन ने
मुझे उनके बारे में बताया कि
मेरे पर दादा जी ने कैसे एक
वीर योद्धा की तरह अंग्रेजों
से युद्ध किया था वह मैं इस
रिसर्च पेपर में बताने वाला
हूँ--

भगवती लाल जी का जन्म
28 जनवरी 1928 में
मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले
के जवासिया नामक ग्राम में
हुआ था जन्म के दौरान ही

उनकी माता जी का निधन हो
गया था भगवती लाल जी के
पिता बालाराम जी कुमावत
को पुत्र प्राप्ति पर बहुत खुशी
भी थी परंतु अपनी पत्नी के
निधन पर दुख भी पर होनी
को कौन टाल सकता है फिर
वह अपने पुत्र को घर ले चले
गए वह अपने पुत्र का भरण
पोषण करने लगे बालाराम जी
एक मिडिल क्लास व्यक्ति थे
वह खेती करके भगवती लाल
जी का भरण पोषण किया
करते थे मिडिल क्लास
व्यक्ति के बच्चे बचपन से
पचपन तक काम किया करते
हैं भगवती लाल जी भी 15
से काम करने लगे थे ज्यादा

नहीं पर उनसे जो हो पाता था वह वही करते थे और अपने पिताजी के काम में अपना हाथ बताया करते थे और साथ ही विद्यालय भी जाते थे 1 दिन बालाराम जी और उनके पुत्र भगवती लाल जी दोनों खेत तो मेक अपनी अपनी सूखी फसल को काटने गए उसी दिन मंदसौर के कलेक्टर एंड रोम साथ कुछ सैनिक घोड़ा और हाथी से शिकार करने के लिए निकले फिर वह शिकार में इतने घूम हो चुके थे कि वह मंदसौर से जवासिया कब पहुंच गए उनको पता ही नहीं चला एक जंगली जानवर का पीछा

करते-करते बालाराम जी के खेत की ओर पहुंच गए वह जानवर बालाराम जी के खेत में घुस गया था और उसका पीछा करते-करते एंड रोम और उसकी पूरी टोली भी पीछे-पीछे गई और सारी फसल खराब कर दी बालाराम जी ने जैसे ही देखा क्योंकि फसल किसी ने खराब कर दी है तो वह गुस्से में आकर उनके पास बड़ी फसल काटने की धमतरी लेकर उन सिपाहियों और एंड रोम्स का पीछा करने लगी और बहुत मुश्किलों के बाद एंड रोम सुन के हाथ लगा और उसे घोड़े से नीचे उतारकर जोरदार

तैयारी से उन पर वार कर दिया एंडरोम्स डर के मारे चिल्लाने लगा और और वह पूरी तरह से लड़ चुका था तब बालम जी ने उससे अपनी फसल का नुकसान का मुआवजा मांगा और एंड रोम्स डर के मारे कहने लगा कि मैं आपका मुआवजा देने को तैयार हूं मेरे पास अभी देने को कुछ नहीं है आपको आप कल मेरे घर आ जाइए मैं आपको कल दे दूंगा और बालाराम जी मान गए और दूसरे दिन जाने को तैयार हो गए और एंडरोम को छोड़ दिया और बालाराम जी और भगवती लाल जी दोनों अपने

घर चले गए और भोजन कर कर सो गए और दूसरे दिन बालाराम जी और भगवती लाल जी दोनों उठ कर मुआवजा लेने के लिए कलेक्टर के घर गए और वहां जैसे ही जाते उन्होंने देखा कि एंड रोम्स के घर सैकड़ों सिपाही बंदूक लेकर खड़े हैं और उनसे भाड़्यों ने जैसे ही बालाराम जी को देखा तो उन्होंने बालाराम जी को बंदी बना लिया और उनके पुत्र भगवती लाल जी को भी पकड़ लिया और एंड रोमस्को बुलाया एंड्रोमचे सही आया उसने बालाराम जी को देखते ही गोलियों से भून दिया

भगवती लाल जी और सारी घटना वहीं खड़े देख रहे थे पर उनकी कम उम्र होने के कारण वह कुछ नहीं कर सके फिर एंड रोम्स ने उनके सैनिक को हुक्म दिया कि बालाराम जी और भगवती लाल जी को राज्य से बाहर फेंक दिया जाए और साथ ही भगवतीलाल को भी मार दिया जाए और ऐसा ही हुआ परंतु हमारे वीर भगवती लाल जी वहां से बचकर निकल गए और रतलाम जिले के चिकलाना तक पहुंच गए भगवती लाल जी भूखे प्यासे भटक रहे थे तब उन्हें एक गाय चराता हुआ इंसान मिला

उसका नाम दीनदयाल मेहता उर्फ बाबूजी था उनका स्वभाव बहुत ही अच्छा था बहुत दयालु और कर्मठ थे उन्होंने 15 वर्षीय भगवती लाल जी को डरे और सहमे देखा तो उन्होंने उस हालत में पहले उन्हें बुलाया और पानी पिलाया और भोजन करवाया फिर भगवती लाल जी ने अपनी दुखद सारी घटना का वर्णन बाबूजी के सामने किया और बाबू जी ने कहा कि तू चिंता ना कर आज से मैं तुम्हारा पिता बन के तुम्हारी पर विश करूंगा और प्यार दूंगा भगवती लाल जी के पास और कोई दूसरा रास्ता

नहीं था भगवती लाल जी ने वहीं रहने का निश्चय कर लिया और साथ ही ठान लिया कि मैं एंड रोमस्को नहीं छोड़ूंगा जिस तरह एंड्राम्स ने मेरे पिता की बेरहमी से हत्या की है मैं भी हेंड रोम्स की बेरहमी से हत्या करूंगा और फिर भगवती लाल जी चिकलाना में ही रहने लगे और बाबूजी के कामों में हाथ बंटाने लगे और दिन में गायों का खेत का सारा काम करते और रात में गीता भागवत का अध्ययन करते बाबू जी की धर्मपत्नी भी भगवती लाल जी को अपने पुत्र जैसा प्यार और

स्नेह देती थी और और बाबूजी के दो बेटे और थे वह सब एक परिवार की तरह ही रहते थे बाबूजी ने उन्हें अनेक प्रकार की किताबों का अध्ययन किया था और सभी धार्मिक किताबों का अध्ययन रोज करते थे भगवती लाल जी एक पंडित के घर रहते रहते पूजा पाठ का अध्ययन करना भी सीख चुके थे यही चलता रहा और देखते-देखते भगवती लाल जी 20 वर्ष के हो चुके थे तब तक वह पूजा-पाठ में पूरी तरह यह पूर्ण हो चुके थे परंतु वह अपने इस नए परिवार में इतना घुल मिल चुके थे कि वह अपना

बदला पूरी तरह से बोल चुके थे और सिर्फ अपने परिवार के बारे में ही सोचा करते थे परंतु जब वह 1 दिन अपनी चिकलाना की घड़ी में पूजा करवाने गए और पूजा चालू की और उस घड़ी के एक सैनिक ने कहीं दूर शादी कर आए नए जोड़े को दूर से गोली चला कर हत्या कर दी तभी भगवती लाल जी ने यह सब देखा तो उन्हें बहुत बुरा लगा और बहुत तेज गुस्सा आया और उन्हें पुरानी बातों का तोहरा लगा और सारी बातें याद आ गई और फिर उसी गुस्से गुस्से में उन्होंने उस सैनिक की हत्या कर दी

और साथ ही खड़े दो तीन सैनिकों और थे उनकी व्याख्या करती और भागकर घर आ गए पीछे पीछे उनके बाबूजी दीनदयाल जी बिजी आ चुके थे उन्होंने सबसे पहले तो भगवती लाल जी को डांटा और दो फटकार भी लगाई और गढ़ से बचने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा था तो वह अपने दोस्त के घर जाने का निश्चय करते हुए गोंडी धर्म से अपने पूरे परिवार के साथ अपने दोस्त के घर चले गए और उन्होंने अपने दोस्त को सारी घटना बताई और और उस दोस्त ने उनकी मदद की और उन्हें

वहां ठहरने की उत्तम व्यवस्था दी और जैसे ही रात होते सारे लोग सो गए थे परंतु भगवती लाल जी को नींद नहीं आ रही थी क्योंकि उनका गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था वह सोच रहे थे कि मैं तो सोचता था कि सिर्फ इंट्रॉस गलत है परंतु यहां तो पूरा अंग्रेजों का साम्राज्य ही गलत है जो बिना कारण बिना गलती किसी को मार दिया करते हैं ऐसा साम्राज्य किस काम का ऐसी सरकार किस काम की और मेरे भारत देश पर कब्जा किया है तो मैं इनको भगा कर ही रहूंगा मैं अपने भारत देश को आजाद

कराने में कहीं एक छोटी सी आहुति या चिंगारी भी लगा सका तो मैं बहुत काम कर दूंगा और वही उन्होंने प्रण ले लिया कि मैं रैंड्रॉप्स के बाद और अंग्रेजों की हत्या करूंगा और भारत देश से अंग्रेजों को भगाने में कुछ अपना योगदान दूंगा और उन्होंने प्रण कर लिया कि मैं देश प्रेम के खातिर न्योछावर होने के लिए प्राण करता हूं और वह उसी टाइम वहां से भागकर मंदसौर आ गए और और मंदसौर कलेक्टर एंड रोम की जासूसी करने लगी और देखने लगी कि कब कहा मारना इसे उचित रहेगा परंतु

इंट्रॉस के साथ बहुत बड़े-बड़े
फिसल रहा करते थे जिसके
कारण उसको मारना
नामुमकिन सा था परंतु हमारे
वीर भगवती लाल जी इन
परिस्थितियों में नहीं घबराते
थे और वह एक घनघोर
रणनीति बनानी शुरू कर दी
और एंड रोम्स की सारी
जानकारियां इकट्ठा कर
लिया और फिर एक रणनीति
तैयार की और रंडी के दौरान
वह अपने घर जवासिया पहुंच
चुके थे वहां जाकर वह अपने
घर को निहारने लगे और
अपने खेतों में जाकर अपने
पिताजी को याद करने लगे
और और रोने लगे और फिर

घर आकर अपने पुराने घर
की साफ सफाई कर कर वहां
रहने लगे फिर कुछ दिनों
बाद गांव वाले को भी पता
चल गया की पुरानी घर में
कोई नहीं आया है तब से
जाकर गांव वाले मिले तब
उन्हें पता चला कि हम वही
भगवतीलाल है बालाराम जी
का लड़का तब गांव वालों ने
उनकी बेटी जिंदगी के बारे में
पूछा और भगवती लाल जी
ने पूरी घटना बताई और ऐसा
ही चलता रहा और फिर कुछ
दिनों बाद यह बात कलेक्टर
एंड रूमस को भी पता चल
गई और और और एंड्रॉयड डर
के मारे गांव का पानी लगा

और सोचने लगा कि भगवतीलाल और बालाराम को तो मैंने मार दिया था फिर वहां कौन रह रहा है और कैसे और फिर उसने अपने उन पुराने सिपाहियों से पूछा कि उस दिन तुमने बालाराम जी और भगवती लाल को मारकर ठिकाने लगा दिया था और फिर डर के मारे सिपाहियों ने सच बोल दिया और एंड रोम डरने लगा और फिर एंड्राम्स अपनी हजारों की तादाद में सैनिकों को लेकर जवासिया के भगवती लाल जी के घर की तरफ निकल चुका था और भगवती लाल जी की रणनीति

के दौरान भगवती लाल जी अपने घर में एक पुतला रखकर घर में आग लगाकर वहां से मंदसौर कलेक्टर के घर के कमरे में आकर चाकू लेकर बैठ गए और इधर एंड रोम व्यवस्था के भगवती लाल जी के घर पहुंचा और उसे पता लगा कि यहां आग लग गई है और भगवती लाल की मौत हो चुकी है और यह जानकर एल्बम्स खुशी खुशी अपने घर की ओर फिर निकल चुका था और सारी सैनिक की फौज को जशन करने के लिए भेज दिया था उधर भगवती लाल जी कमरे में चाकू लेकर बैठे थे खूंखार

बंद कर परंतु उनकी रणनीति तो अच्छी चल रही थी परंतु एंड रूम की जगह उसकी पत्नी पहले पहुंच गई और भगवती लाल जी को देख लिया और जोर जोर से चिल्लाने लगी भगवती लाल जी उसका मुंह पकड़ कर उसे बोलती बंद कर सकते थे परंतु भगवती लाल जी उनके पिताजी की तरह बहुत ही दयालु और कृपालु थे वह खुद की जान दे सकते थे पर किसी निर्बल और किसी स्त्री की जान नहीं ले सकते थे और ना चाही चोट पहुंचा सकते थे परंतु इसका फायदा एल्बम्स की पत्नी ने उठाया

और जोर-जोर से चिल्लाकर सभी सैनिकों को बता दिया कैंडोम्स अपने कमरे के ठीक बाहर ही खड़ा था जैसे ही उसने सुना कि भगवतीलाल जिंदा है और वह उसके कमरे के अंदर है तो वह डर के मारे कांपने लगा और इधर उधर भागने लगा और सैनिक को उस से गिरा नीचे चला गया और सैनिकों से गिर गया और सैनिक ने उसे घेर लिया श्री भगवती लाल जी वह कमरे से डायरेक्ट नीचे मैदान में कूद गए और उनके पैर में चोट आ गई और उनकी टांग में फ्रैक्चर हो गया था परंतु वह इन चीजों से हार नहीं

मानते थे और धड़ाधड़
सैनिकों पर वार करने लगे
और वार करते करते एंड रोम
के पास पहुंच गए और एंड
रोम्स को बेरहमी से मार
दिया परंतु एग्जाम्स के
सैनिक की तादाद बहुत बढ़
चुकी थी और और भगवती
लाल जी के पैर में चोट लगने
के कारण वह उठ नहीं पा रहे
थे तो परिस्थितियों का लाभ
सैनिकों ने उठाया और
भगवती लाल जी की हत्या
कर दी परंतु भगवती लाल
जी मरते दम तक एक वीर
योद्धा की तरह युद्ध करते
रहे और अपने देश को

आजाद कराने में किसी हद
तक एक आहुति बन गए ।

English

Our beloved country India was liberated from the slavery of the British on 15 August 1947, many heroes had sacrificed their lives to liberate it, "My salute to all of them" but the one I will talk about in this research paper was also a brave warrior. Who was my good friend Sudarshan Kumawat but grandfather was Bhagwati Lal ji, he was also one of the fasting warriors of independence till today. I am going to tell in this research paper that Bhagwati Lal ji was born on January 28,

1928 in a village called Jawasia in Mandsaur district of Madhya Pradesh. His mother died during his birth. Balaram ji Kumawat was also very happy on getting a son, but who can avoid being sad on the death of his wife, then he took his son home, he started taking care of his son Balaram ji was a middle class person. He used to take care of Bhagwati Lal by farming Works till Bhagwati Lal ji also started working from 15 but not much he used to do whatever he could do and used to tell his hand in his father's work and also used to go to school for 1 day Balaram ji and His son Bhagwati Lal ji went to both the fields to harvest his own dry crop, on the same day some soldiers along with the

Collector and Rome of Mandsaur went out to hunt with horse and elephant, then he had gone so much in hunting that when he left Mandsaur to Jawasia. When they reached, they did not know that while chasing a wild animal, they reached Balaram ji's farm and that animal had entered Balaram ji's field and while chasing him and Rome and his whole team also went back and forth. And spoiled the whole crop. As soon as Balaram ji saw that because someone has spoiled the crop, then he got angry and started chasing those soldiers and end roms with the threat of harvesting a big crop and after many difficulties listen to end rom. and took him down from the horse and thwarted them

with vigorous preparation. Andromes started screaming in fear and and he had fought all the way. Balam ji asked him for compensation for the loss of his crop and the end roms started saying out of fear that I am ready to give your compensation, I have nothing to give you, you come to my house tomorrow, I will give it to you tomorrow and Balaram ji agreed and agreed to go on the second day and left the endrom and both Balaram ji and Bhagwati Lal ji went to their house and had food and slept and on the second day both Balaram ji and Bhagwati Lal ji got up to collect the compensation. And as soon as he went there he saw that hundreds of soldiers are standing with

guns in the house of And Rome and as soon as the brothers saw Balaram ji from them, they took Balaram ji captive and his son Bhagwati Lal ji was also caught and And Romesco called Andromache right, he fired bullets on seeing Balaram ji and was watching the whole incident standing there but he could not do anything due to his young age then and Romes ordered his soldier that Balaram ji and Bhagwati Lal ji should be thrown out of the state and at the same time Bhagwatilal should also be killed and it happened but it happened. Mare Veer Bhagwati Lal ji escaped from there and reached Chiklana in Ratlam district. He was hardworking, he saw 15 year old Bhagwati Lal ji scared and

scared, then he first called him in that condition and gave him water and food, then Bhagwati Lal ji described all his sad incident in front of Babuji and Babu ji said that you are worried. No, from today I will wish you by becoming your father and give love. Bhagwati Lal ji had no other way. Andrams has brutally murdered my father I will also brutally kill Hand Roms and then Bhagwati Lal ji started living in Chiklana and started helping babuji's work and doing all the farm work of cows during day and night While studying Gita Bhagwat, the wife of Babu ji also treated Bhagwati Lal ji as her son. She used to give love and affection and and babuji had two more sons, they all

lived like a family, babuji had studied many types of books for them and used to study all religious books every day Bhagwati Lal ji was a pandit While living, he had learned to study the worship text, this continued and by the time Bhagwati Lal ji was 20 years old, by then he had been completely completed in the worship, but he was so engrossed in this new family. It was found that he had spoken his revenge completely and used to think only about his family, but when he went to get the worship done in his hour of Chiklana on 1 day and started the worship and a soldier of that clock somewhere far away. The newly married couple was shot and killed from a

distance, when Bhagwati Lal ji saw all this, he felt very bad and got very angry and he felt old things and remembered all the things and then got angry. In I killed that soldier and there were two or three soldiers standing at the same time interpreting him and running away and came home, behind his babuji Deendayal ji busy aa chu. helped them and gave them the best arrangements to stay there and as soon as night fell all the people were asleep but Bhagwati Lal ji could not sleep because his anger was increasing he was thinking that I used to think that Only the intro is wrong, but here the whole British empire is wrong, who kill anyone without any reason, what is

the use of such an empire, what is the use of such a government and I have occupied my country, then I will keep them away. If I could make a small sacrifice or spark somewhere in liberating my country of India, I would do a lot of work and he took a vow that I would kill more Britishers after the randrops and do something to drive the British out of India. Will contribute and he vowed that I would sacrifice my life for the sake of patriotism and at the same time he ran away from there and came to Mandsaur and started spying on Mandsaur Collector and Rome and started seeing when it would be appropriate to kill But there used to be huge slips

with introns due to which it was impossible to kill him. But our heroic Bhagwati Lal ji did not panic in these situations and he started making a diligent strategy and gathered all the information of end roms and then prepared a strategy and during the scavenging he had reached his home in Jawasia. He started looking at his house and went to his fields and remembered his father and started crying and then came home after cleaning his old house and started living there, then after a few days the villager also came to know that the old house No one has come, since then the villagers went and met them, then they came to know that we are the same Bhagwatilal, the boy of Balaram ji, then

the villagers asked about his daughter's life and Bhagwati Lal ji told the whole incident and continued like this and then After a few days, the Collector and Rooms also came to know about this and due to fear and fear, the water of the village started thinking that I had killed Bhagwatilal and Balaram, then who is living there and how and then he took his Asked the old soldiers that on that day you had killed Balaram ji and Bhagwati Lal and then the soldiers did not die out of fear. I told the truth and and Rome started getting scared and then Andrams had left for Bhagwati Lal ji's house in Jawasia with thousands of soldiers and during Bhagwati Lal ji's strategy, Bhagwati Lal

ji kept an effigy in his house. After setting fire to Mandsaur, he sat down in the room of the collector's house with a knife and reached the house of Bhagwati Lal ji of the Here and Rome system and came to know that there was a fire here and Bhagwati Lal had died and knowing this The albums had gone happily to his house and then sent the entire army to celebrate, while Bhagwati Lal ji was sitting in the room with a knife, closing the dread but his strategy was going well but instead of the end room His wife reached first and saw Bhagwati Lal ji and started shouting loudly. Could have taken the life of a weak and a woman and could not have hurt, but the

wife of the album took advantage of it and who shouting loudly, told all the soldiers Candoms was standing just outside his room as soon as he heard that Bhagwatilal was alive and he was inside his room, he started trembling with fear and started running here and there and told the soldier that fell down and fell from the soldiers and the soldiers surrounded him Shri Bhagwati Lal ji he jumped straight down from the room into the ground and got hurt in his leg and fractured his leg but he was defeated by

these things They did not believe and started attacking the soldiers and while attacking and reached near Rome and brutally killed End Romes, but the number of soldiers of Exams had increased a lot and due to injury to Bhagwati Lal ji's leg. He was not able to rise, so the soldiers took advantage of the situation and killed Bhagwati Lal ji, but Bhagwati Lal ji kept fighting like a brave warrior till his death and became a sacrifice to some extent in liberating his country.

It self

Vaibhav Rawal from Madhya pradesh (M.P.)

Ratlam jaora dhodhar chiklana

**student of B.tech CSE in mandsaur institute of
tecnology (MIT)**

Mandsaur University(MU)

Reference

- 1.My friend sudarshan
- 2.idias as that compliment
on it
- 3.it is a research

Thakyou
